

काली का संगीत

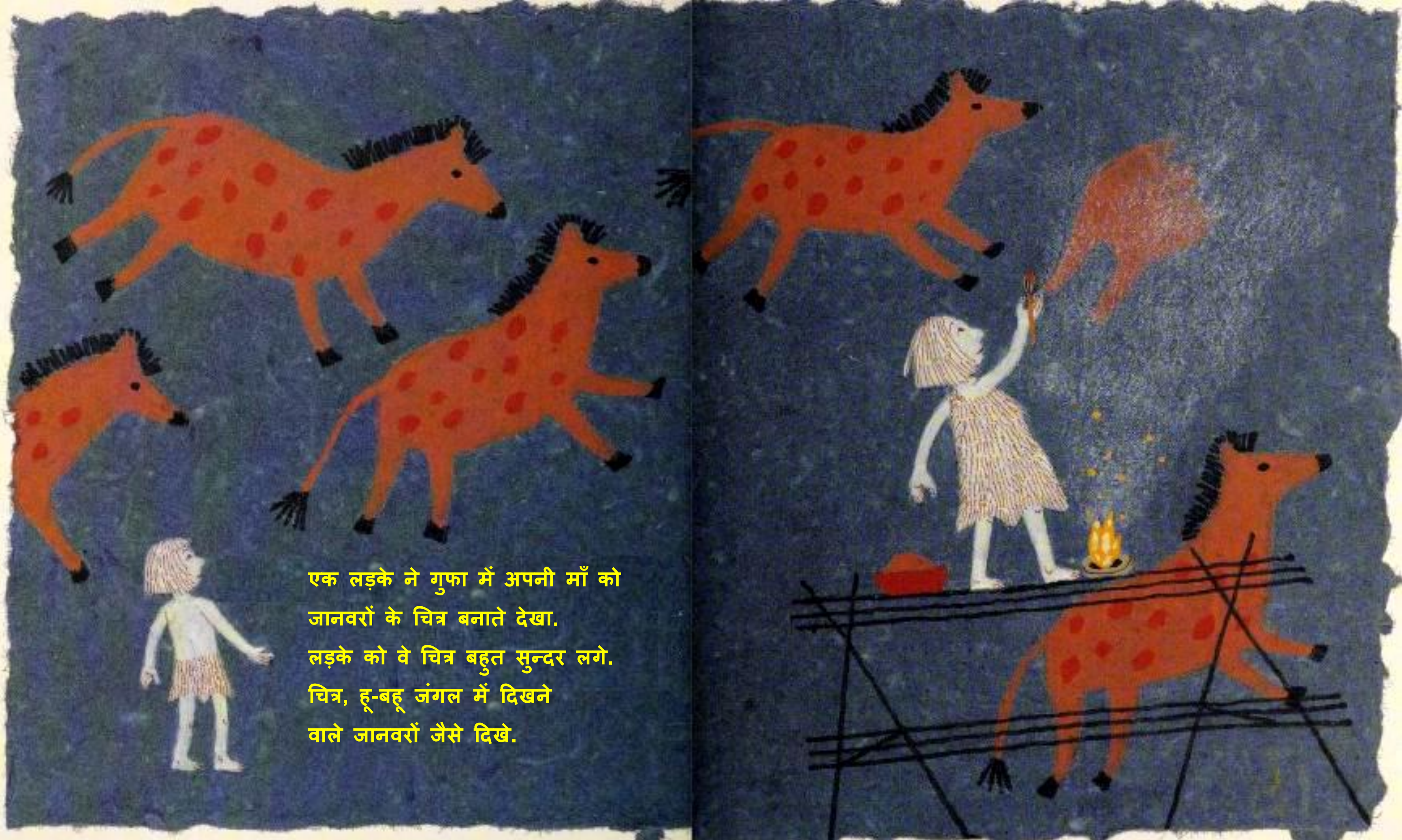


काली का संगीत



आज से हज़ारों,
हज़ारों,
हज़ारों साल
पहले.





एक लड़के ने गुफा में अपनी माँ को
जानवरों के चित्र बनाते देखा.
लड़के को वे चित्र बहुत सुन्दर लगे.
चित्र, हू-बहू जंगल में दिखने
वाले जानवरों जैसे दिखे.



"काली तुम जल्द ही बड़े होकर आदमी बनोगे," माँ ने कहा,
"फिर तुम इन जानवरों का शिकार करोगे."



काली के पिता ने उसे एक धनुष दिया.
"काली, पहले शिकार के लिए तुम
धनुष का अभ्यास करो," उन्होंने कहा.



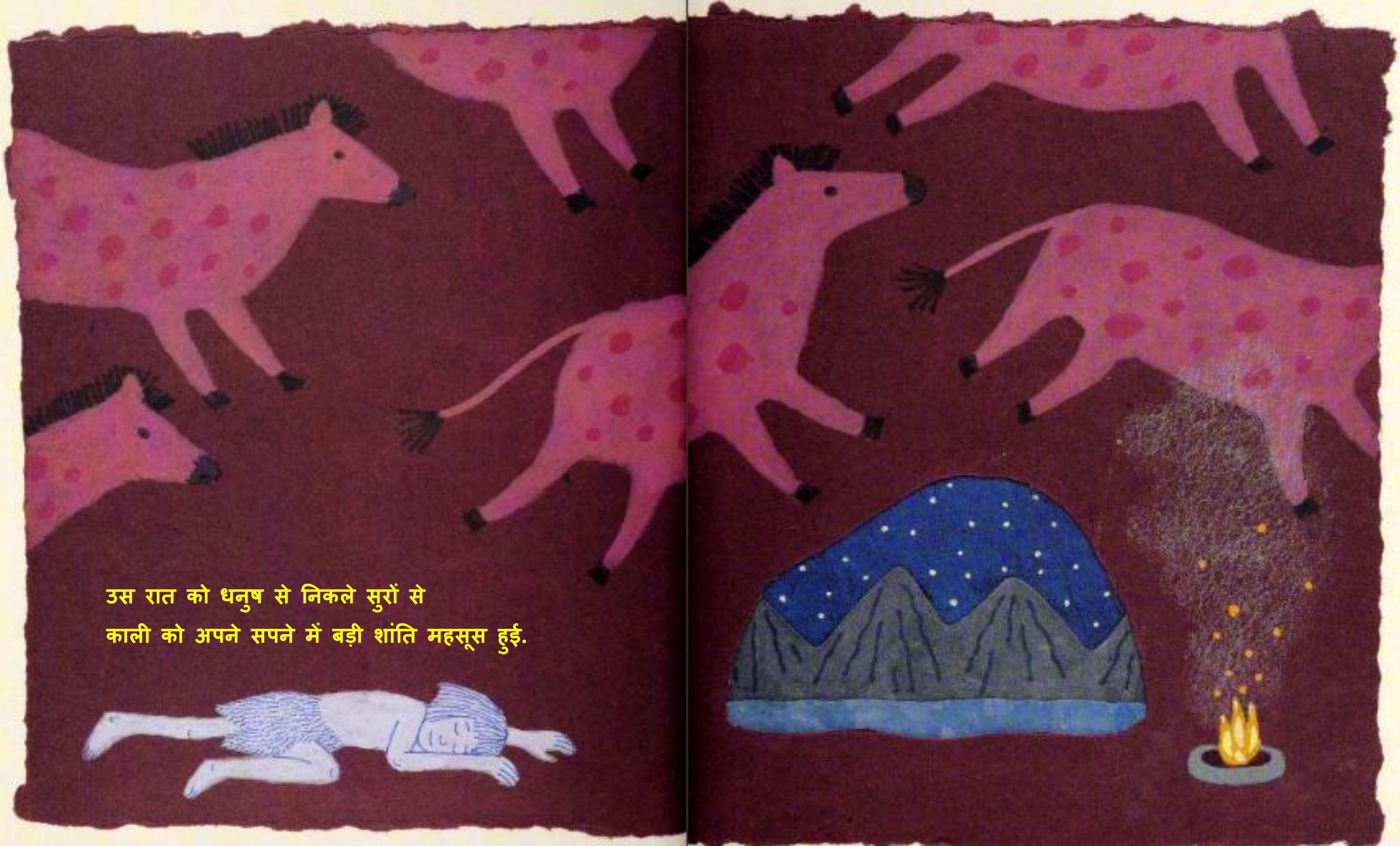
काली पूरे दिन धनुष से तीर
छोड़ने का अभ्यास करता रहा.

अंत में जब वो आराम करने बैठा
तो उसने गलती से धनुष की डोर को एक झटका दिया.
उससे निकली आवाज़ काली को पसंद आई.
उसने तनी डोर को दुबारा झटका.
झटकने के बाद वो धनुष को अपने
मुंह के पास लाया और उसने अपना मुंह खोला और बंद किया.
फिर धनुष में से नए-नये सुर निकलने लगे.



उसके बाद काली, धनुष से तीर छोड़ने की बात भूल गया.
वो तनी डोर को झटककर संगीत पैदा करता रहा.
आसमान के सितारे उसका संगीत सुनने के लिए पास आए.



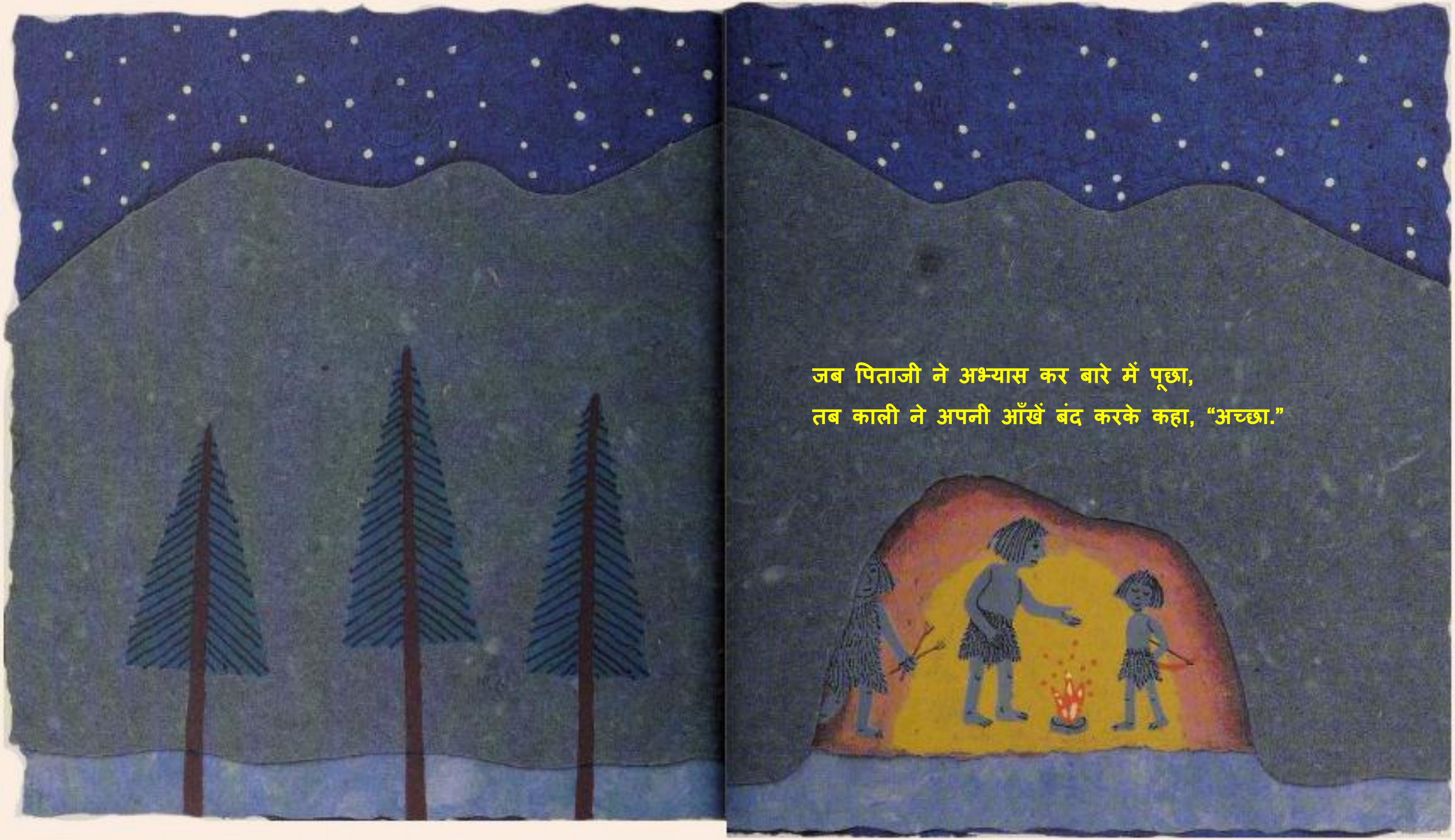


उस रात को धनुष से निकले सुरों से
काली को अपने सपने में बड़ी शांति महसूस हुई.

फिर हर दिन काली, धनुष के अभ्यास के लिए जाता.
गुफा से दूर पहुँचने पर
वो अपने तीरों को ज़मीन पर रख देता.
फिर वो धनुष को अपने मुंह से लगाकर
धनुष की तनी डोर को झटकता.
उस मधुर संगीत को सुनकर जानवर रुक जाते
चिड़िये भी उन्हें सुनकर चहचहाना बंद कर देतीं.
संगीत सुनने के लिए आसमान के तारे भी पास आते.

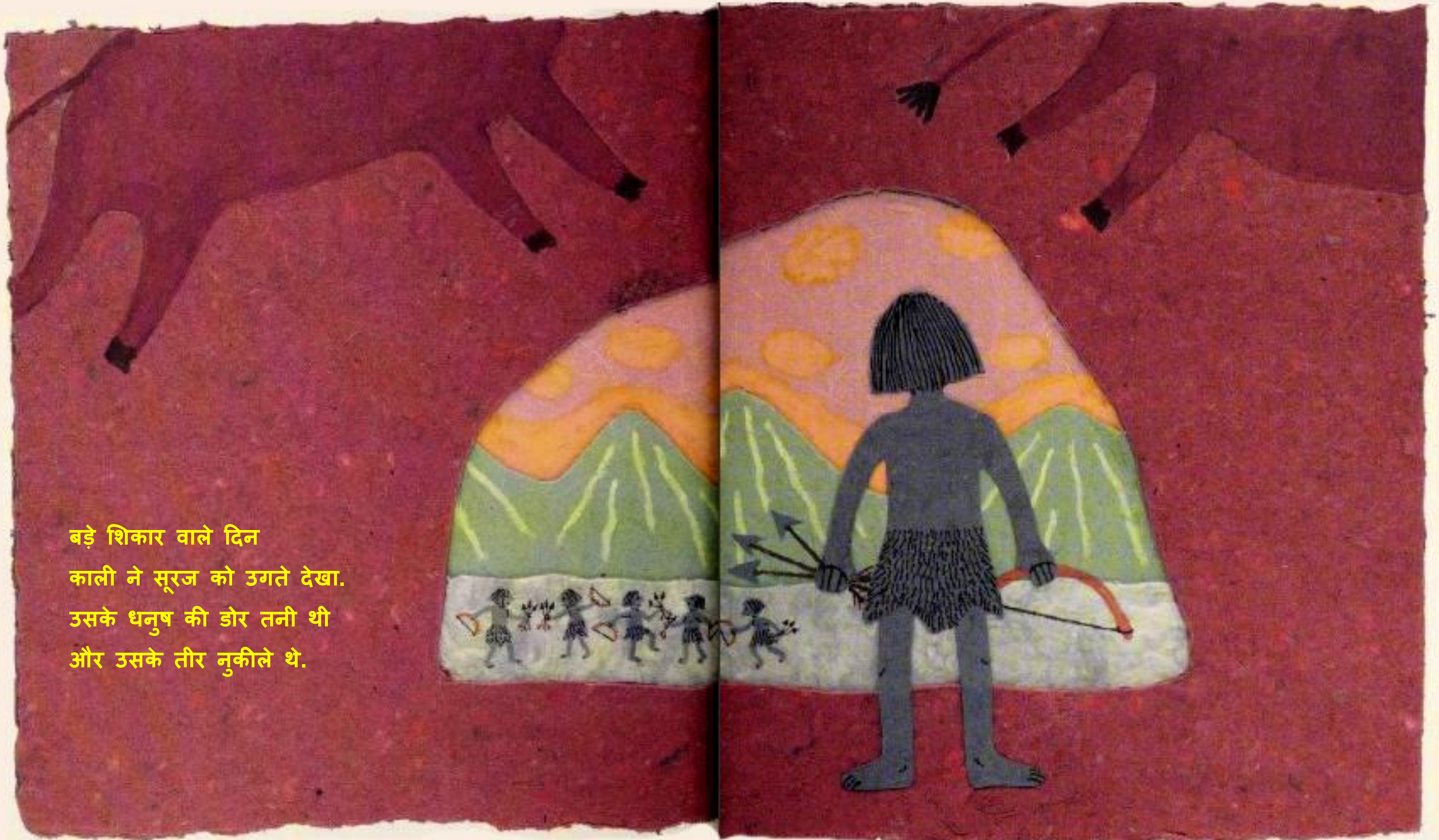






जब पिताजी ने अभ्यास कर बारे में पूछा,

तब काली ने अपनी आँखें बंद करके कहा, “अच्छा.”



बड़े शिकार वाले दिन
काली ने सूरज को उगते देखा.
उसके धनुष की डोर तनी थी
और उसके तीर नुकीले थे.

ताकतवर आदमी सबसे आगे थे.

उनके पीछे-पीछे लड़के बड़े उत्साह से भाग रहे थे.

वे पहाड़ियों, घाटियों और सपाट मैदान पर दौड़े.

अंत में लीडर को दूर कुछ जानवर दिखे.

काली ने अपने जीवन में इतने भीमकाय और

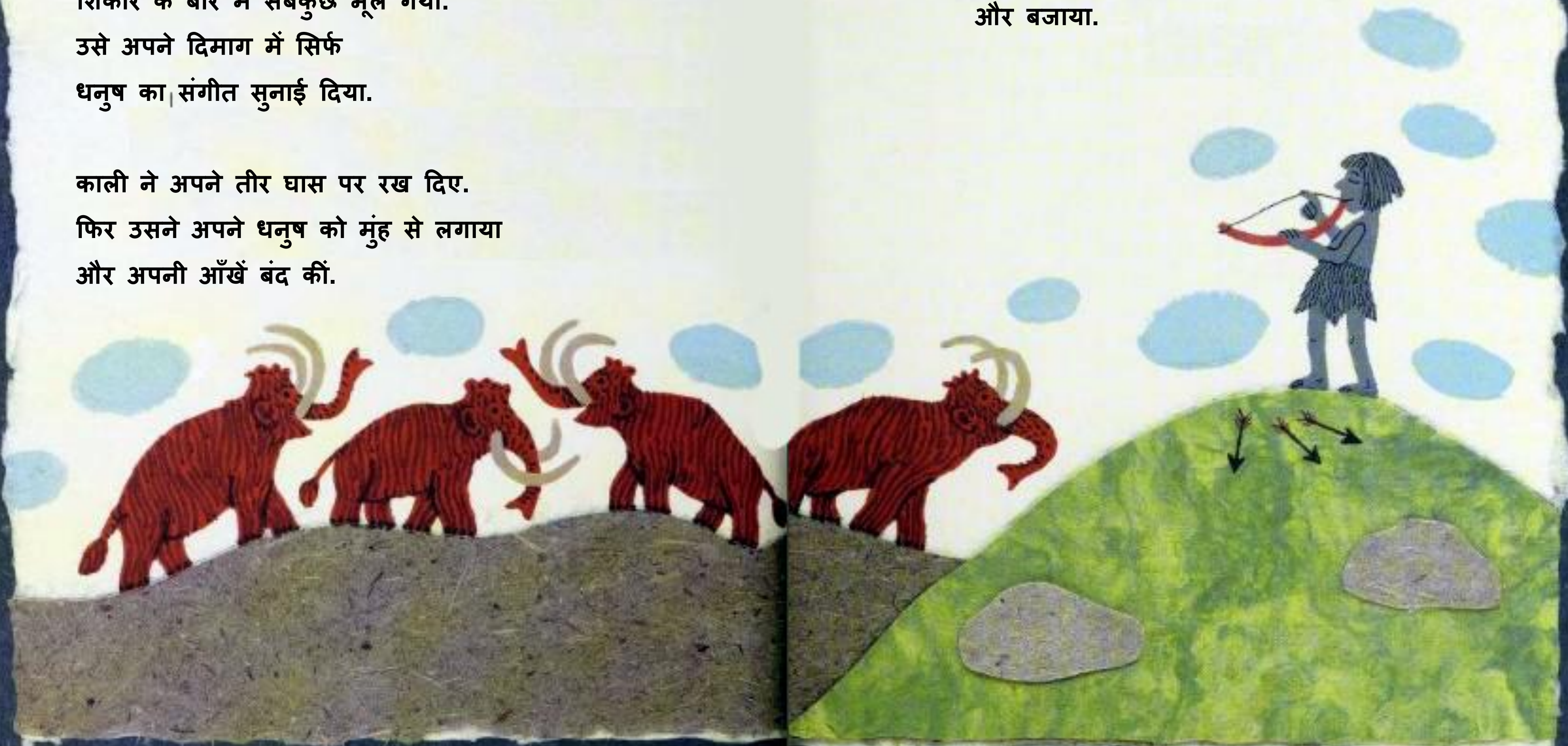
सुन्दर जानवर पहले कभी नहीं देखे थे.



काली उन जानवरों को पास से देखने के लिए पहाड़ी पर चढ़ा.
उन जानवरों की सुन्दरता को देखकर काली
शिकार के बारे में सबकुछ भूल गया.
उसे अपने दिमाग में सिर्फ
धनुष का संगीत सुनाई दिया.

काली ने अपने तीर घास पर रख दिए.
फिर उसने अपने धनुष को मुंह से लगाया
और अपनी आँखें बंद कीं.

उसने संगीत बजाया
बजाया,
और बजाया.

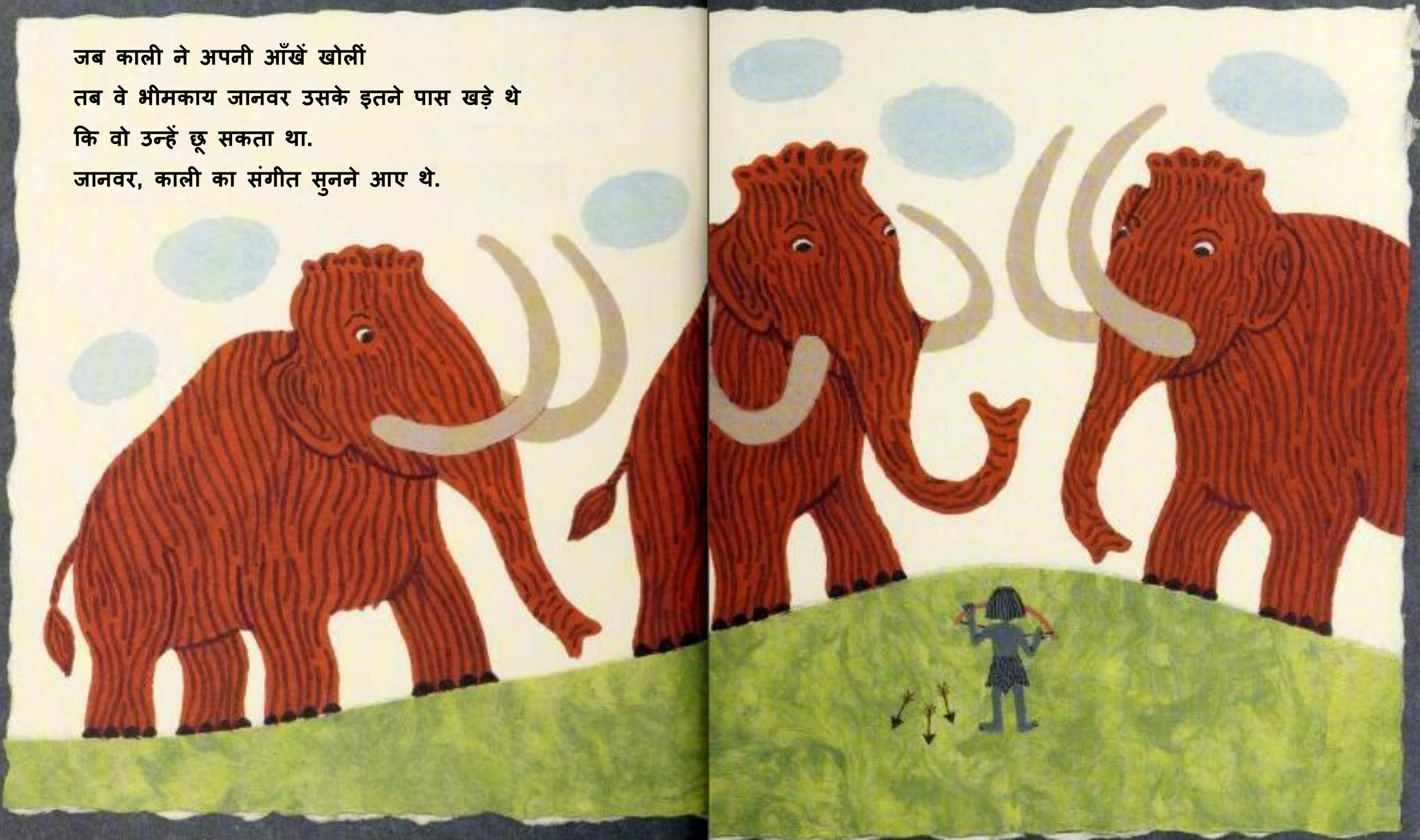


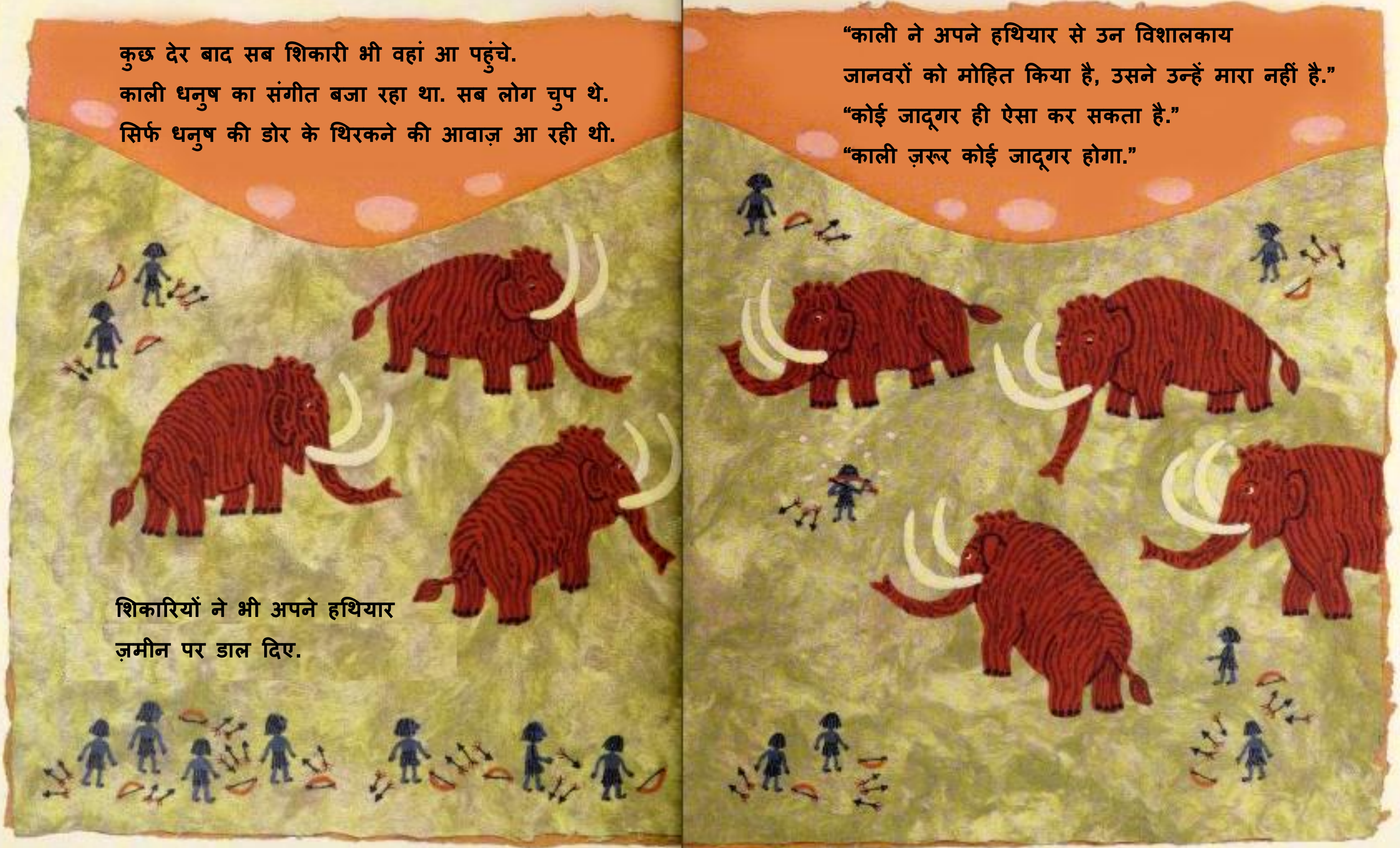
जब काली ने अपनी आँखें खोलीं

तब वे भीमकाय जानवर उसके इतने पास खड़े थे

कि वो उन्हें छू सकता था.

जानवर, काली का संगीत सुनने आए थे.

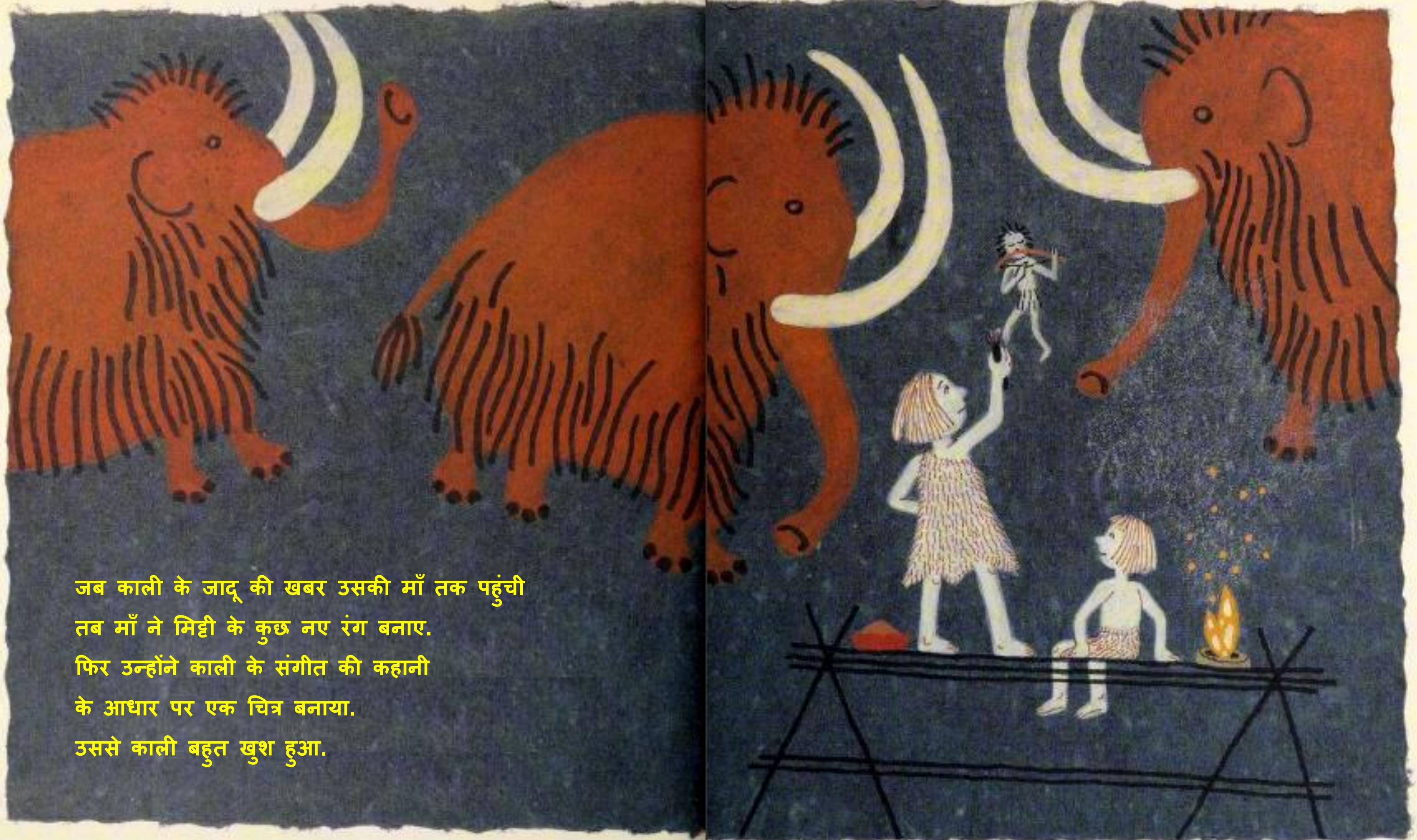




कुछ देर बाद सब शिकारी भी वहां आ पहुंचे.
काली धनुष का संगीत बजा रहा था. सब लोग चुप थे.
सिर्फ धनुष की डोर के थिरकने की आवाज़ आ रही थी.

शिकारियों ने भी अपने हथियार
ज़मीन पर डाल दिए.

“काली ने अपने हथियार से उन विशालकाय
जानवरों को मोहित किया है, उसने उन्हें मारा नहीं है.”
“कोई जादूगर ही ऐसा कर सकता है.”
“काली ज़रूर कोई जादूगर होगा.”



जब काली के जादू की खबर उसकी माँ तक पहुंची
तब माँ ने मिट्टी के कुछ नए रंग बनाए.
फिर उन्होंने काली के संगीत की कहानी
के आधार पर एक चित्र बनाया.
उससे काली बहुत खुश हुआ.

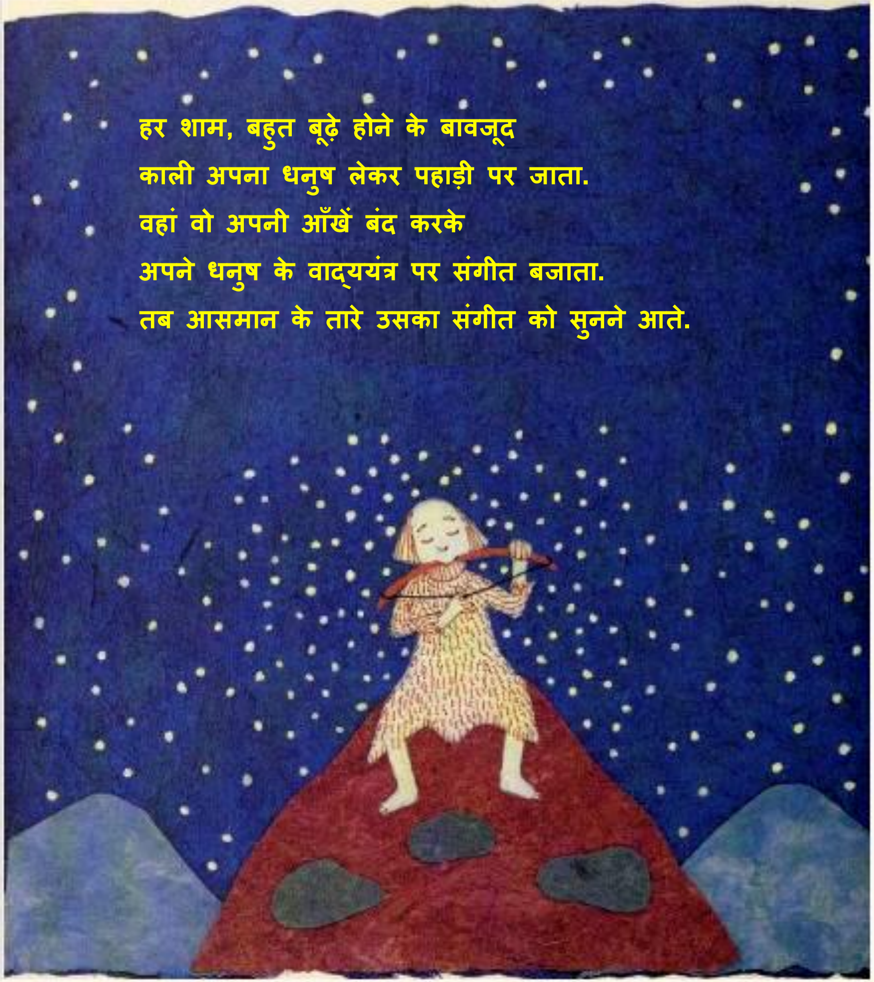
काली जब बड़ा हुआ तब
लोग उससे सलाह लेने आते.



काली, बीमार लोगों का इलाज करता.



वो अपने पुरखों की आत्माओं से बात करता.


हर शाम, बहुत बूढ़े होने के बावजूद
काली अपना धनुष लेकर पहाड़ी पर जाता.
वहां वो अपनी आँखें बंद करके
अपने धनुष के वाद्ययंत्र पर संगीत बजाता.
तब आसमान के तारे उसका संगीत को सुनने आते.



